eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

प्रसाद के काव्य साहित्य में स्त्री गरिमा का प्रस्तुतिकरण

श्री गोपाल सिंह[1]
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी) श्री गाँधी महविद्यालय, सिधौली, सीतापुर उ0प्र0

Received: 21 November 2023 Accepted and Reviewed: 25 November 2023, Published : 01 Dec 2023

Abstract

श्री जयशंकर प्रसाद ने अपने साहित्य के माध्यम से स्त्री गरिमा और महिमा का आख्यान प्रस्तुत किया है। उन्होंने नारी को एक आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया है। उनकी नारी एक ओर दया माया ममता और करुणा की प्रतिमूर्ति है तो दूसरी ओर वह शक्ति स्वरूपा भी है। वह पुरुष की प्रेरणा स्रोत है नारी का यह स्वरूप प्रसाद की प्रतिनिधि रचना कामायनी में निखर कर सामने आया है। प्रसाद के नारी चरित्र अपूर्व देश प्रेम और सर्व मंगल की भावना से भरे हुए हैं। और दूसरों को भी वैसा ही करने की प्रेरणा देते हैं। श्री जय शंकर प्रसाद ने अपनी रचनाओं के माध्यम से स्त्री जीवन से जुड़ी अनेक समस्याओं को भी उठाया है और अपने स्तर से उनका समाधान भी प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। प्रसाद जी स्त्री पुरुष के बीच समता के हिमायती थे। किंतु वे स्त्री को पुरुष की और पुरुष को स्त्री की प्रतिद्वंद्विता में नहीं खड़ा करते अपितु उन्हें एक दूसरे का पूरक बनाकर प्रस्तुत करते हैं। स्त्री पुरुष के मध्य सामरस्य की स्थापना करते हैं।

बीज शब्द– समरसता, कृष्णागुरुवर्तिका, नवजागरण , संसृति, पुरुषत्व–मोह, शैवागम, महाचिति, उन्मीलन।

Introduction

श्री जयशंकर प्रसाद ने अपने काव्य साहित्य में पुरुष पात्रों की तुलना में नारी चरित्र को अधिक महत्व दिया है। प्रसाद के प्रमुख समीक्षक डॉक्टर नंददुलारे बाजपेई का तो यहां तक कहना है कि ऐसा प्रतीत होता है कि प्रसाद के स्त्री चरित्र जैसे पुरुष का उद्धार करने के लिए ही रचे गए हों। आचार्य वाजपेयी लिखते हैं–

यदि प्रसाद जी की सारी रचना में किसी आदर्श की ओर झुकाव है तो इसी नारी आदर्श की ओर यही आदर्श उन्हें एक श्रेष्ठ प्रेम आख्यानक कवि के पद पर प्रतिष्ठित कर सका।[1] प्रसाद द्वारा नारी आदर्श की स्थापना के पीछे का कारण है सदियों से नारी के प्रति होने वाला भेदभाव। इस्लाम हो या हिंदू धर्म सभी स्थान पर पुरुषों के लिए बहु विवाह का मार्ग खुला हुआ है । जबकि उन्हीं धर्मों में स्त्री पर काफी प्रतिबंध लगाए गए हैं। स्त्रियों पर समाज के विभिन्न क्षेत्रों में एकतरफ़ा लगाए गए प्रतिबंध तथा उनकी हीन दशा जयशंकर प्रसाद के संवेदनशील कवि मन को लगातार उन्मथित करती रहती थी। श्री जयशंकर प्रसाद ने अपनी कविता और नाटकों के माध्यम से स्त्री जीवन से जुड़ी विभिन्न समस्याओं का न केवल चित्रण किया है, बल्कि अपने स्तर से समाधान भी प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। उदाहरण के लिए ध्रुवस्वामिनी नाटक के माध्यम से प्रसाद जी ने स्त्री जीवन से जुड़ी एक आधुनिक समस्या पर प्रकाश डाला है वह है स्त्री पुनर्विवाह की समस्या। जयशंकर प्रसाद ने अपने काव्य में स्त्री को दया माया ममता मधुरिमा और आघाध विश्वास की

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

प्रतिनिधि के रूप में देखा है। आपके अनुसार स्त्री का मूल व्यक्तित्व श्रद्धा रूप है जो ईर्ष्या द्वेष और वैषम्य की ज्वाला से दग्ध इस संसार के लिए मलय के झोंके की तरह है। प्रसाद के काव्य में ऐसे अनेक वर्णन देखने को मिलते हैं। यथा–

नारी तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास रजत नग पग तल में
पीयूष स्रोत सी बहा करो जीवन के सुंदर समतल में।
दया, माया, ममता लो आज,
मधुरिमा लो, अगाध विश्वास;
हमारा हृदय रत्न निधि स्वच्छ
तुम्हारे लिए खुला है पास।
बनो संसृति के मूल रहस्य
तुम्हीं से फैलेगी वह बेल;
विश्व भर सौरभ से भर जाए
सुमन खेलो सुंदर खेल।[2]

उल्लेखनीय है कि स्त्री के इस पूर्ण समर्पण के पीछे लोक कल्याण और सर्वमंगल का व्यापक उद्देश्य छिपा हुआ है। केवल किसी पुरुष की भोग्या बनकर अपने जीवन को कृतार्थ समझ लेने से कहीं अधिक विश्व को सौरभ से भर देने का वृहत उद्देश्य इस समर्पण के मूल में है। अतः इसे महज गलदअश्रु भावुकता मान लेना भ्रम होगा।

प्रसाद के अनुसार संसार में जो कुछ भी श्रेष्ठ है कल्याणकारी है उसकी मूल प्रेरणा और उसके पीछे की शक्ति स्त्री है। स्त्री ही है जो प्रलय की विभीषिका में भी सृजन की कल्पना कर लेती है बल्कि पुरुष को उसके लिए प्रेरित भी करती है। सम्पूर्ण विध्वंस के बाद भी भी सृजन की आशा ना छोड़ने का साहस श्रद्धा जैसी स्त्रियों में ही है–

"एक तुम, यह विस्तृत भू–खंड
प्रकृति वैभव से भरा अमंद;
कर्म का भोग, भोग का कर्म
यही जड़ का चेतन आनंद।
अकेले तुम कैसे असहाय
यजन कर सकते? तुच्छ विचार!
तपस्वी! आकर्षण से हीन
कर सके नहीं आत्म विस्तार।

यही नहीं नव सृजन के लिए श्रद्धा मनु को शक्ति संचय का मार्ग भी बताती है–

शक्ति के विद्युत्कण जो व्यस्त
विकल बिखरे हैं, हो निरुपाय;
समन्वय उसका करे समस्त
विजयिनी मानवता हो जाय।[3]

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

नारी के त्याग समर्पण और उत्सर्ग के पीछे विजयिनी मानवता हो जाय का ही मंगलकारी लक्ष्य है।

और नारी के ही क्यों नवजागरण के उसे युग में स्त्री पुरुष दोनों के समक्ष यही परम लक्ष्य था। तथा प्रसाद की नारी श्रद्धा विश्वास रूपिणी होने के साथ–साथ शक्ति स्वरूपा भी है। इसके बावजूद कुछ आलोचक श्री जयशंकर प्रसाद पर यह आरोप लगाते हैं कि उहोने स्त्री को देवी रूप में चित्रित करके उसे वास्तविक कर्म क्षेत्र से दूर कर दिया। कुछ आधुनिक चिंतकों के अनुसार स्त्री के प्रति हुए अन्याय का हल स्त्री को मात्र श्रद्धा की वस्तु बना देने से नहीं होगा। अपितु समाज में उसे समानता का अधिकार देने से होगा । अतः स्त्री का इस प्रकार श्रद्धा रूप में चित्रण उसे प्रतिस्पर्धा में पीछे रखने का प्रयास हो सकता है ।और यह उसकी उन्नति में बाधक है। इस आरोप का उत्तर जयशंकर प्रसाद के प्रमुख समीक्षक और उनके आत्मीय मित्र आचार्य नंददुलारे वाजपेयी ने कामायनी विषयक अपने एक लेख में दिया है। वे लिखते हैं–

नारी को विद्या में बुद्धि में चरित्र में सब प्रकार पुरुष से श्रेष्ठ सिद्ध करना है। साथ ही परस्पर प्रतियोगिता का भाव भी बनाए रखना है। इसी दोहरी मनोवृति के कारण प्रसाद ने कामायनी को एकदम आधुनिक नायिका नहीं बनने दिया है इस संबंध में आधुनिकों को यदि ऐतराज हो तो प्रसाद जी के पास उसकी कोई दवा नहीं है।[4] वस्तुत जयशंकर प्रसाद स्त्री सशक्तिकरण और स्त्री पुरुष समानता के प्रबल समर्थक रहे हैं किंतु है स्त्री पुरुष को परस्पर प्रतिद्वंद्वी मानने के स्थान पर दोनों को एक दूसरे का पूरक मानते हैं। स्त्री पुरुष असमानता ही नहीं वह समाज में व्याप्त अन्य सभी तरह की विषमता का समाधान संघर्ष में न देखकर समरसता में देखते हैं। इसी कारण वर्ग संघर्ष और वर्ग भेद वकालत करने वाले चिंतकों को प्रसाद जी के काव्य में असमानता और विभेद के दर्शन होते हैं। जहां तक स्त्री पुरुष समानता की बात है तो इसका भी समाधान वे समरसता में ही खोजते हैं। इड़ा सर्ग में काम मनु को को धिक्कारते हुए कहता है–

भूल गये पुरुषत्व–मोह में ,कुछ सत्ता है नारी की

समरसता है संबंध बनी अधिकार और अधिकारी की।"5

कामायनी में श्रद्धा मनु की प्रेरणा रूप में आयी है। वह मनु को जीवन के अंतिम लक्ष्य तक पहुँचने प्रेरणा व शक्ति है. कामायनी में मनु के चरित्र में अनेक कमजोरियों और विचलन के दर्शन होते हैं, वहीं श्रद्धा का चरित्र उतना ही सशक्त. दृढ़ व स्थायित्व से युक्त है। यह श्रद्धा ही है जो मनु के मन की चंचलता के आगे अडिग खड़ी रहती है. नारी के प्रति प्रसाद का दृष्टिकोण कामायनी में श्रद्धा के माध्यम से ही प्रकट होता है. उन्होंने श्रद्धा का चरित्र चित्रण ऐसी नारी के रूप में किया है जो पुरूष की अनुगामिनी नहीं, सहगामिनी बल्कि सहगामिनी से बढ़ कर नर की जीवन यात्रा की सारथी है। कामायनी ही नहीं समूचा प्रसाद साहित्य स्त्री के वैशिष्ट्य को गाढ़े रूप में रेखांकित करता प्रतीत होता है। रीतिकालीन कविता से आधुनिक कविता में जो मौलिक भेद हैं उनमें सबसे प्रमुख है । उनका स्त्री विषयक दृष्टिकोण। रीतिकाल में स्त्री मात्र देह है जो पुरुष की तृप्ति का साधन मात्र है। इसके अतिरिक्त स्त्री का अपना कोई व्यक्तित्व नहीं है। वह विचार और भावना

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

से पूरी तरह से रिक्त है। इसीलिए रीतिकालीन कवियों के वर्णन में मस्तक या सर की बारी सबसे अंत में आती है। इसलिए उनके सौंदर्य वर्णन को नख शिख वर्णन के रूप में जाना जाता है।

छायावाद के कवि जयशंकर प्रसाद ने भी श्रद्धा और इड़ा का सौंदर्य वर्णन किया है। इससे संबंधित पंक्तियां यहां उद्धृत की जा रही हैं। श्रद्धा का सौंदर्य वर्णन करते हुए वह कहते हैं–

हृदय की अनुकृति बाह्य उदार
एक लंबी काया, उन्मुक्त;
मधु पवन क्रीड़ित ज्यों शिशु साल
सुशोभित हो सौरभ संयुक्त।[6]

इसी प्रकार इड़ा का रूप वर्णन प्रसाद ने कुछ इस प्रकार किया है–

बिखरी अलकें ज्यों तर्क जाल
वह विश्व मुकुट सा उज्ज्वलतम शशिखंड सदृश था स्पष्ट भाल
दो पद्म पलाश चषक से दृग देते अनुराग विराग ढाल
गुंजरित मधुप से मुकुल सदृश वह आनन जिसमें भरा गान
वक्षस्थल पर एकत्र धरे संसृति के सब विज्ञान ज्ञान
था एक हाथ में कर्म कलश वसुधा जीवन रस सार लिये
दूसरा विचारों के नभ को था मधुर अभय अवलंब दिये
त्रिवली थी त्रिगुण तरंगमयी , आलोक वसन लिपटा अराल
चरणों में थी गति भरी ताल ।[7]

इन दोनों के सौंदर्य वर्णन पर यदि हम विचार करें तो पाएंगे की दोनों ही देह स्थान पर क्रमशः भाव और विचार अर्थात हृदय और बुद्धि को प्रधानता दी गई है। इड़ा के रूप वर्णन में तो प्रसाद ने नख सिख वर्णन की परिपाटी को ही शीर्षासन करा दिया है। अर्थात नख–शिख वर्णन में जहां पैर से आरंभ करके सर की ओर जाया जाता था। वहीं प्रसाद ने शीर्ष से शुरू करके पद तक का क्रम अपनाया है। उसमें भी शुरुआती पंक्तियों पर यदि ध्यान दिया जाए तो अलकों का बिखरा होना स्पष्ट रूप से मस्तिष्क में तर्क वितर्क के चलने का संकेत देता है।

जयशंकर प्रसाद की सबसे चर्चित रचना कामायनी पर यदि हम विचार करें तो हम पाते हैं की वैदिक देव माला में देवताओं के साथ देवियों का भी उल्लेख मिलता है उदाहरण के लिए ऋग्वेद में उषा को प्रातः काल की देवी कहा गया है ,जो अश्व जुते वेगवान रथ पर सवार होकर बहुत ही क्षिप्र गति से आती हैं। कामायनी में इस प्रसंग का वर्णन कुछ इस तरह से है–

उषा सुनहरे तीर बरसती जय लक्ष्मी सी उदित हुई
उधर पराजित कालरात्रि भी जल में अंतर्निहित हुई।[8]

इस प्रकार कामायनी के कथानक पर यदि विचार करें तो उससे भी यह पता चलता है स्त्रियों को कितना अधिक महत्व दिया गया है। उदाहरण के लिए कथा में संकेतित है कि श्रद्धा मुक्त भाव से विचरण के लिए पूरी तरह से स्वतंत्र है। इसी प्रकार इड़ा को सारस्वत प्रदेश की रानी के रूप

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

में चित्रित किया गया है। वह वहां की शासिक है और जब मनु उसके साथ जोर जबरदस्ती करने का प्रयत्न करते हैं तो प्रजा विद्रोह कर उठती है। अर्थात जनमन स्त्री शासिका इड़ा के प्रति पूर्ण श्रद्धा रखता है।

तात्विक दृष्टि से यदि विचार किया जाए तो सृष्टि का आदि कारण चित् शक्ति है जो स्त्री रूप ही है । यही सृष्टि के प्रलय और सृजन का हेतु है–

कर रही लीलामय आनंद
महाचिति सजग हुई सी व्यक्त
जगत का उन्मीलन अभिराम
इसी में सब होते अनुरक्त।[9]

शक्ति शब्द स्वयं में ही स्त्रीलिंग है इसके संधान की प्रेरणा प्रसाद की अलग–अलग रचनाओं में विभिन्न स्त्री पात्र ही देते हैं उदाहरण के रूप में चंद्रगुप्त नाटक का प्रसिद्ध उद्‌बोधन गीत जिसे अलका ने गया है दृष्टव्य है–

हिमाद्रि तुंग शृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयंप्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती
अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़–प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पंथ हैं – बढ़े चलो बढ़े चलो।[10]

चंद्रगुप्त ही नहीं प्रसाद के लगभग सभी नाटकों में स्त्री चरित्र पुरुषों की अपेक्षा अधिक सशक्त दिखाई पड़ते हैं फिर चाहे वह चंद्रगुप्त की कार्नेलिया अलका और मालविका हों स्कंदगुप्त की देवसेना, विजया और जयमाला हों या ध्रुवस्वामिनी की ध्रुवस्वामिनी। छायावाद का काल गाँधी जी के नेतृत्व एवं राष्ट्र'–भावना के प्रसार का काल था'। उनसे प्रेरित होकर पुरूषों के साथ–साथ स्त्रियों ने भी देश के लिए बढ़–चढ़कर कदम उठाया। छायावाद का काल गाँधी जी के नेतृत्व एवं राष्ट्र'–भावना के प्रसार का काल था' द्य उनसे प्रेरित होकर पुरूषों के साथ–साथ स्त्रियों ने भी देश के लिए बढ़–चढ़कर कदम उठाया।

वस्तुतः जयशंकर प्रसाद का रचनाकाल भारत की स्वतंत्रता के लिए चल रहे गांधीवादी आंदोलनों का काल है। असहयोग आंदोलन में पुरुषों के साथ साथ स्त्रियों ने भी बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया था। प्रसाद ने भी अपने साहित्य के माध्यम से देश के सम्मान और स्वतंत्रता की रक्षा के पुनीत कार्य में स्त्रियों को बढ़ –चढ़कर हिस्सा लेते चित्रित किया है। विशेष कर प्रसाद के नाटकों में ऐसे अनेक उदाहरण देखने को मिलते हैं। ऊपर लिखित उद्‌बोधन गीत भी प्रसाद के चंद्रगुप्त नाटक से लिया गया है। स्कंदगुप्त नाटक में देश पर आए संकट काल के समय देवसेना पर्णदत्त के साथ मिलकर गीत गाकर नागरिकों को देश रक्षा के लिए प्रेरित करती है–

देश की दुर्दशा निहारोगे
डूबते को कभी उबारोगे
हारते ही रहे, न है कुछ अब
दाँव पर आपको न हारोगे

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

कुछ करोगे कि बस सदा रोकर
दीन हो दैव को पुकारोगे
सो रहे तुम, न भाग्य होता है
आप बिगड़ी तुम्हीं सँवारोगे
दीन जीवन बिता रहे अब तक
क्या हुए जा रहे, विचारोगे।[11]

जयशंकर प्रसाद के स्त्री चरित्र दया माया ममता की प्रतिमूर्ति होने के साथ–साथ आत्मसम्मान और आत्म गौरव की भावना से भी भरी हुई हैं।

महाकाव्य और नाटकों के साथ–साथ जयशंकर प्रसाद ने अपनी लंबी कविताओं के माध्यम से भी स्त्री की अस्मिता के प्रश्न को उठाया है। उदाहरण के रूप में यहां हम जयशंकर प्रसाद लिखित प्रलय की छाया कविता को ले सकते हैं। यह कविता भारत के मध्यकालीन इतिहास पर आधारित है जहां अलाउद्दीन खिलजी के द्वारा गुजरात विजय के उपरांत गुजरात की रानी कमला को बंदी बनाकर ले जाया जाता है। प्रसाद ने एक काव्य बिंब के द्वारा बंदिनी कमला के माध्यम से एक स्त्री की मनोदशा को उकेरने का प्रयत्न किया है। कविता की कुछ पंक्तियां दृष्टव्य हैं–

कृष्णागुरुवर्तिका
जल चुकी स्वर्ण पात्र के ही अभिमान में
एक धूम–रेखा मात्र शेष थी,
उस निस्पन्द रंग मन्दिर के व्योम में
क्षीणगन्ध निरवलम्ब।
किन्तु मैं समझती थी, यही मेरा जीवन है![12]

प्रस्तुत पंक्तियों में एक स्त्री के अंतर्द्वंद को इस बारीकी से उकेरा है वह संपूर्ण हिंदी साहित्य में अद्वितीय है। श्रीमान का इतना गहरा विश्लेषण प्रसाद जैसा कलाकार ही कर सकता था।

इस प्रकार यदि हम विचार करें तो पाते हो की संपूर्ण प्रसाद काव्य स्त्री की महिमा और गरिमा का विस्तृत आख्यान है। प्रसाद ने अपने काव्य साहित्य के माध्यम से स्त्री के चरित्रगत वैशिष्ट्य को गंभीरता के साथ उद्घाटित किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1– आचार्य नंददुलारे वाजपेयी, जयशंकर प्रसाद, लोक भारती प्रकाशन प्रयागराज 2013(पृष्ठ 67)

2– जयशंकर प्रसाद, कामायनी, लोक भारती प्रकाशन प्रयागराज 2017 (पृष्ठ16)

3–वही (पृष्ठ 16,17)

4–आचार्य नंददुलारे वाजपेयी, जयशंकर प्रसाद, लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज 2013 (पृष्ठ 67)

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

5–जयशंकर प्रसाद, कामायनी, लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज 2017 (पृष्ठ 53)

6–जयशंकर प्रसाद, कामायनी, लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज 2017 (पृष्ठ13)

7–जयशंकर प्रसाद कामायनी लोक भारती प्रकाशन प्रयागराज 2017 (पृष्ठ–57)

8–जयशंकर प्रसाद ,कामायनी ,लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज 2017(पृष्ठ–7)

9–जयशंकर प्रसाद, कामायनी, लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज 2017 (पृष्ठ15)

10– जयशंकर प्रसाद ,चंद्रगुप्त ,भारती भंडार लीडर प्रेस, प्रयागराज द्वितीय संस्करण (पृष्ठ 177)

11– जयशंकर प्रसाद, स्कंदगुप्त, भारतीय भंडार लीडर प्रेस , प्रयागराज, द्वितीय संस्करण (पृष्ठ 158)

12– जयशंकर प्रसाद, लहर, लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज 2002(पृष्ठ 84)